पद्मश्री पं0 सुरेश तलवलकर के दृष्टिकोण में पेशकार, कायदा, रेला एवं लग्गीनाडा

डॉ0 प्रवीण उद्धव
एसोसिएट प्रोफेसर, वाद्य विभाग (तबला)
संगीत एवं मंच कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी–221005

सारांश

पद्मश्री पं. सुरेश तलवलकर को तबला वादन के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है, इसका मुख्य कारण उनकी वैचारिक सृजनशीलता है जो उनके तबला वादन में परिलक्षित होती है। उनके विचारों का अनूठापन उनको दूसरों से अलग तो करता ही है साथ ही दूसरे तबला वादकों को एक अलग दिशा में सोचने की प्रेरणा भी देता है। प्रस्तुत शोध पत्र पं. सुरेश तलवलकर के तबला संबंधी बहुमूल्य विचारों को रेखांकित करता है। शोध पत्र में पेशकार, कायदा, रेला और लग्गीनाडा के सन्दर्भ में उनके विचारों का विश्लेषण कर उनकी व्याख्या की गई है। शोध पत्र मूलतः प्राथमिक स्रोतों पर आधारित है।

मूल शब्दः पं. सुरेश तलवलकर, तबला, पेशकार, कायदा, रेला, लग्गीनाडा.

पं0 सुरेश तलवलकर एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने पिछले दस सालों से तीन ताल में कोई स्वतंत्र वादन नहीं किया। वे पिछले दस सालों से रूपक, झपताल, एकताल, दीपचंदी, धमार, आड़ाचौताल और मत्त ताल में ही अपना स्वतंत्र वादन कर रहे हैं। इन तालों में परंपरागत रूप से रचनाओं का भंडार प्राप्त नहीं होता है। सर्वाधिक रचनाएँ तीन ताल में ही हुई हैं। इस कारण रचनाओं पर गहन अध्ययन, विचार कर पं0 सुरेश तलवलकर ने परंपरागत रचनाओं के ऊपर भिन्न तालों का छंद ऐसे चढ़ाया है कि वे रचनायें उन्हीं तालों की लगने लगी हैं। मूल रचना के साथ–साथ रचना के विस्तार प्रक्रिया में भी उस ताल का छंद आच्छादित रहता है। यह उनके ताल छंद पर गहन अध्ययन के कारण है। किसी भी रचना का किसी छंद–ताल से संबंध, अपने प्रायोगिक पक्ष से सिद्ध करना महान् कलाकारों की श्रेणी में आता है। कुछ ही लोगों पर ईश्वर की ऐसी कृपा रहती है कि वे उच्च कोटि के वादक होने के साथ–साथ उच्च कोटि के रचनाकार भी होते हैं, उनमें से ही एक पं. सुरेश तलवलकर हैं, जिन्होंने अन्य तालों के लिए रचनाएँ दीं, एक विचार दिया।

हमारा संगीत प्रवाहशील है। संगीत की परंपरा की दो धारा होती है– एक रूढ़िवादी परंपरा और एक परिवर्तनशील परंपरा। परिवर्तन, यह संगीत की मांग है, लेकिन इस तरह के परिवर्तन में परम्पराओं के निर्वाह की जिम्मेदारी भी कलाकार पर रहती है। जिन परम्पराओं ने वर्षों तक घनघोर तपस्या के बाद

हमें कुछ दिया है, उनके प्रति हमारी कृतज्ञता हमारे परिवर्तन में भी दिखना चाहिए। जब से तबले का विकास शुरू हुआ है तभी से तबले की रचनाओं का क्रम शुरू हुआ और आज एक बहुत बड़े विशाल भंडार के रूप में हमारे सामने हैं। पं0 सुरेश तलवलकर ने इसी भंडार से प्राप्त भाषा को नये ताल–छंद से आच्छादित किया है।

जब हम यह विचार करते हैं कि रचना कैसे बनती हैं तो देखते हैं कि पहले हमें इसका ध्वनि ज्ञान, उसके वर्णों जैसे– ता, ति, ट, गे, घे आदि से हुआ। इसके बाद उनमें शब्द बन गये– धातिट, तिरकिट, धागे। इसके बाद फ्रेजेस बने धातिरकिटतक, धिरधिरकिटतक, धागेदिंगदिनागीन, धात्रकधिकिट और फिर इन फ्रेजेस से रचना बनी। पं0 सुरेश तलवलकर ने विस्तारक्षम रचना पर अपने विचार दिये तथा भिन्नताल में इन पर रचनाएँ की हैं। अब हम क्रम से रचना प्रकारों से संबंधित विचार को उनकी निबद्ध रचना में देखेंगे।

पेशकार

पं0 सुरेश तलवलकर के वादन का प्रमुख आकर्षण उनका पेशकार है भारत के गिने चुने वादक जो पेशकार पर बड़े हक से काम करते हैं उनमें से पं0 सुरेश तलवलकर एक हैं, तो हम सबसे पहले पं0 सुरेश तलवलकर का तत्संबंधी विचार देखेंगे ''तबला वादन का आरंभ ही पेशकार से होता है। जिस ताल को प्रस्तुत करना है उस ताल का समग्र, सखोल (गहराई तक) फील पर पेशकार खड़ा रहता है। गायन में जिस प्रकार विलंबित लय में राग का पूर्ण विस्तार और उसकी गहराई आलाप में से प्रस्तुत की जाती है, उसी प्रकार सर्व भाग अंग, उपांग, जावक और न्यास, पेशकार में प्रस्तुत होती है। विलंबित से द्रुत लय तब बजाये जाने वाली विशिष्ट आकृतिबद्ध यह संकल्पना है। पेशकार में बंदिश का बंदिशगत रूप नहीं है पर गायन या वादन में जिस प्रकार आलाप से राग का स्वरूप और महत्व सिद्ध किया जाता है, उसी के समान तबला वादन में विलंबित लय में ताल का स्वरूप और बनावट पेशकार के द्वारा दर्शाया जाती है। पेशकार के वाक्य की समाप्ति में धाधाधिंना, धिंना, धाधिंना, धातिधाधिंना आदि आते हैं। पेशकार की गति इन शब्दों के आँस को लंबी और विस्तारित करती है। तबला वादन के सर्व प्रकारों में पेशकार का स्वरूप गंभीर, विशाल, भव्य और धीरोदात्त है। तबला वादन और तबला वादक का दर्जा और प्रबलता अपने वाद्य पर उसका प्रभुत्व पेशकार के माध्यम से ही सामने आता है। संगीत के प्रति वादक की दृष्टि और उसकी वृत्ति या सारांश में कहा जाये तो वादक का व्यक्तित्व पेशकार के रूप में साकार होता है।

पं0 सुरेश तलवलकर द्वारा पेशकार को बंदिश गत नहीं मानने के करण ही उनका पेशकार किन्हीं भी शब्दों से शुरू होता है– धिना, धाधिंना, धाधाधिंना, धातिधाधिंना, धाक्ड़धाधिंना शब्द अंत में स्थाई चलते हैं। पेशकार में धिंत्रकधिंना, धिक्डधिंना, धाक्डधातिरकिट आदि शब्दों से उनका पेशकार शुरू

होता है। खाली–भरी के सूत्र से विभिन्न कलात्मक व लयात्मक शब्दाकृतियाँ निर्माण की जाती है, जिसे हम नोटेशन के माध्यम से नहीं बता सकते। जिस प्रकार आलाप का नोटेशन नहीं होता, उसी प्रकार पेशकार में की गई कल्पनाओं का सही–सही रूप से नोटेशन नहीं कर सकते। पं. सुरेश तलवलकर का पेशकार, उनके संस्कार, प्रकृति, व्यक्तित्व, अनुभव और चिंतन को अपनी प्रस्तुतिकरण में प्रकट करता है। गूँज युक्त स्वर मय शब्दों की धीमी गति– ये उनके पेशकार में लयबद्ध आलाप महसूस होता है। उनका प्रतिभाशाली और प्रयोगशील होना उनके वादन में प्रत्यक्षतः दिखता है।

यहाँ हम उनके द्वारा बजाये गये पेशकार के कुछ अंश मोटे–मोटे तौर पर दे रहे हैं।

ताल तीनताल

धाऽक्डधातिर ×	किटधाधिंना	तिरकिटधात्ति	धाधाधिंना ।
तिरकिटधाधिं 2	नातिरिकटधा	धिंनाधात्ति	धाधाधिंना ।
ऽत्रकतिंना 0	ऽतातिंना	तिरकिटतात्ति	तातातिंना ।
तिरकिटधाधिं 3	नातिरकिटधा	धिंनाधात्ति	धाधाधिंना ।

ताल एकताल

(1)

धिंत्रकधिंना ×	त्रकधिंनात्ति	।	धाधाधिंना 0	त्रकधिंनाधिं	।
त्रकधिंनात्ति 2	धाधातिंना	।	ऽत्रकतिंना 0	तिंनातात्ति	।
तातातिंना 3	त्रकधिंनाधिं	।	त्रकधिंनात्ति 4	धाधाधिंना	।

(2)

धाऽक्रधाधिं ×	नाघिनाधा	।	ऽक्रधातिंना 0	तिरिकटधाधिं	।
नाघिनाधा 2	ऽक्रधातिंना	।	ऽतातिंना 0	तिंनाताऽक्र	।
तातातिंना 3	तिरकिटधाधिं	।	नाघिनाधा 4	ऽक्रधातिंना	।

तालरूपक

(1)

धिंत्रक धिंना त्तिधा । 0	धिंना धाति । 1	धाधा तिंना । 2
तिंत्रक तिंना त्तिधा । 0	धिंता धाति । 1	धाधा धिंना । 2

(2)

धाऽऽक्र धाऽतिर किटधाऽ । तिरकिट धाति । धाधा तिंना ।
0 1 2
ताऽऽक्र ताऽतिर किटधाऽ । तिरकिट धाति । धाधा धिंना ।
0 1 2

ताल–झपताल

(1)

धाड़ धाधिं । नाघि नाधा तिंना ।
× 2
घिना धाधिं । नाघि नाधा तिंना ।
0 3
ऽता तातिं । नाकि नाता तिंना ।
× 2
घिना धाधिं । नाघि नाधा धिंना ।
0 3

(2)

धाक्र धातिर । किटधा क्रधा धिंना ।
× 2
किटधा धातिर । किटधा क्रधा तिंना ।
0 3
ताक्र तातिर । किटता क्रता तिंना ।
× 2
किटधा धातिर । किटधा क्रधा धिंना ।
0 3

उपर्युक्त पेशकारों के विस्तार में पं0 सुरेश तलवलकर की मौलिकता दिखाई देती है।

कायदा

इस विस्तारक्षम रचना का पं0 सुरेश तलवलकर ने गहराई से अध्ययन किया है और परंपरागत रचनाओं में (जो की तीनताल में निबद्ध है) भिन्न ताल छंदों के दर्शन कर उसे अपने वादन से ऐसे सिद्ध किया है जैसे वह वादन उसी ताल की हो, जिससे संपूर्ण परंपरागत रचनाएँ जिनमें घरानों की विचार धाराएँ शामिल है सभी तालों में सिद्ध होने लगी।

पं0 सुरेश तलवलकर एक प्रतिभा संपन्न विचारवान कलाकार हैं। उन्होंने अपने गहन चिंतन मनन को अपने वादन में सिद्ध किया हैं। वे जो बोलते हैं, जो सोचते हैं उसे सिद्ध करते हैं। कायदे के लिये भी उन्होंने विचार किया है जो इस प्रकार हैं– ''कायदे की परिभाषा और स्पष्टीकरण एक वाक्य में करना कठिन है, परन्तु संस्कृत वचनों के अनुसार इसमें कर्ता, कर्म व क्रिया इन तीनों का समावेश होने के कारण इसमें विशाल अर्थ निहित है, इस कारण से कायदा का विस्तार कई विभिन्न प्रकारों से हो सकता है। इस रचना को विस्तार करते समय मूल रचना के बोल या अक्षर बजाने का बंधन निर्वाह

किया जाता है। मूल रचना से बाहर अक्षरों का अंतरभाव कायदे में नहीं किया जा सकता। जबकि कुछ प्रतिभावान कलाकारों ने इस नियम के विपरीत जाकर नये शब्दों या अक्षरों का उपयोग कर कायदे का विस्तार किया हैं।

कायदे के बोल खण्ड स्वरूप रहते हैं, इसलिए खंडित या विभाजित हो सकने वाले रहते हैं। इस रचना को देखकर लगता है कि अंतिम वाक्य का अंतिम वर्ण स्वर होता है, अर्थात् वह चाँटी पर समाप्त होता है। इसलिए कायदा मध्य लय में बजाया जाता है। कायदे के तत्व में कायदे का दोहरा होना आवश्यक माना गया है। रचना की बढ़त विस्तार, बल, पल्टे आदि प्रकारों से होती है। दोहरे की प्रथा से कायदे की मूल रचना सादी, सरल रहना चाहिए, किन्तु इस नियम के कुछ अपवाद हैं। कुछ अनवट कायदे, कुछ अछोप और कुछ जोड़ कायदे भी होते हैं।

अजराड़ा घराने के कायदों में अंतिम वर्ण का उच्चारण स्वर होते हुये भी बजाते समय वह व्यंजन समझकर बजाया जाता है। अजराड़ा घराने की विशिष्टता, उसकी गहराई का विचार, अलग अक्षरों का प्रयोग कर प्रस्तुत करना है।

कायदों के विस्तार करने के दो तरीके हैं– पहला गणित प्रकार और दूसरा उपज अंग होता है। उपज अंग में भाषा सौन्दर्य संतुलन संभलकर कायदे के बल पल्टे बनाना होते हैं। कायदे के विस्तार में कभी–कभी बल या पल्टा नवीन कायदे का रूप ग्रहण कर लेता है। कुछ फरमाईशी कायदे हैं। इसमें खाली के या बंद अक्षर से कायदे की शुरूआत होती है। ऐसी रचनाएँ कुछ प्रतिभावान कलाकारों ने की है।

कायदा (एकताल)

धागेतिट घिनाधागे । त्रकधिना गीनधाति । टघीनाधा त्रकदिंग ।
× 0 2
दिनागीन धागेतिट । घिनाधाति टघिनाधा । त्रकतिंग तिनागीन ।
0 3 4
तागेतिट किनातागे । त्रकतिना गीनताति । टकिनाता त्रकतिंग ।
× 0 2
तिनागीन धागेतिट । घिनाधाति टघिनाधा । त्रकदिग दिनागीन ।
0 3 4

रूपक कायदा

धागतिट क्डधातिट धागेनति ।
0
टक्डधाति टकिनधा । गेनधागे तिनागिना ।
1 2

तागेतिट क्डतातिट तागेनति ।
0
टक्डधाति टकिनधा । गेनधागे तिनागिना ।
1 2

कायदा (एकताल)

धागेनधा ऽधिकिट । घिनतिना गीनधात्र । कधिकिट घिनतिना ।
× 0 2
गीनघिन धात्रकधि । किटघिन तिनाकधि । किटघिन तिनागीन ।
0 3 4
तागेनता ऽतिकिट । किनतिना गीनतात्र । कतिकिट किनतिना ।
× 0 2
गीनघिन धात्रकधि । किटघिन तिनाकधि । किटघिन धिनागीन ।
0 3 4

ताल झपताल (कायदा)

धागेतिट कताधाति । टकताधा त्रकदिंग दिनागीन ।
× 2
तिटतिट कताधाति । टकताधा त्रकतिंग तिनागीन ।
0 3
तागेतिट कतातति । टकताता त्रकतिंग तिनागीन ।
× 2
तिटतिट कताधाति । टकताधा त्रकदिंग दिनागीन ।
0 3

रेला

पं0 सुरेश तलवलकर अपने वादन में रेले की प्रस्तुति निराले ढंग से करते हैं। वे रेले में आठ मात्रा में दस मात्रा या आठ मात्रा में बारह मात्राओं को अपनी विस्तार प्रक्रिया में दिखाते हैं, जबकि रेला अपनी निश्चित गति में ही चलता है।

''रेला इस शब्द का अर्थ– ''रव्'' है। कायदे के शब्द का प्रत्येक अक्षर स्वतंत्र अस्तित्व प्रस्थापित कर सकता है, किन्तु रेले की संकल्पना में यह संभव नहीं है। रेले में एक वर्ण या एक स्वर अनेक व्यंजनों या अक्षरों को साथ लेकर चलता है इसलिए रेला द्रुत अक्षरों में बजता है। रेले की रचना में उसके अंतिम शब्द का अंतिम वर्ण व्यंजन रहता है। 'रव्' का अर्थ छोटा दाना है। एक बड़ा स्वर और उसके साथ आने वाले छोटे–छोटे दानें ऐसी इसकी रचना रहती है और कायदे के समान खाली भरी के सिद्धांत पर इसका विस्तार होता है। इस रचना में अक्षर प्रकारों का एक प्रवाह रहता है, इसलिए रेला एक बहने वाली प्रवाही रचना कही जा सकती है।

रेला तीनताल

धातिरकिटधा घिटतकधिंतिर किटतकधिंतिर किटधाघिटतक ।
×
धिंतिरकिटतक धिंतिरकिटधा तिरकिटधाघिड नगधिंतिरकिट ।
2
तातिरकिटता किटतकतितिर किटतकतितिर किटधाघिटतक ।
0
धिंतिरकिटतक धिंतिरकिटधा तिरकिटधाघिड नगधिंतिरकिट ।
3

पं0 सुरेश तलवलकर द्वारा अन्य तालों में रेले की रचना, कुछ उदाहरण।

ताल रूपक (रेला)

धातिरघिटतक धिरधिरकिटतक धिरधिरधिरकिट ।
0
तकधातिरकिट तकतिरकिटतक । धातिरकिटतक तिनाकिटतक ।
1 2
तातिरकिटतक तिरतिरकिटतक तिरतिरतिरकिट ।
0
तकधातिरकिट तकतिरकिटतक । धातिरकिटतक धीनाकिटतक ।
1 2

ताल झपताल (रेला–आड़ी लय)

धातिरकिट तकधीना । नाकिटतक धीनाना किटतकधा ।
× 2
तिरकिटतक घिनाकिट ।तकधातिर किटतकधि नाकिटतक ।
0 3
तातिरकिट तकतीना । नाकिटतक तीनाना किटतकता ।
× 2
तिरकिटतक घिनाकिट ।तकधातिर किटतकधि नाकिटतक ।
0 3

ताल मत्त (रेला)

धातिर किटतक । धिरधिर किटतक
× 2
तिरकिट धातिर किटतक । तिना किटतक ।
0 3
तातिर किटतक । तिरतिर किटतक ।
× 2
तिरकिट धातिर किटतक । तिना किटतक

0 3

लग्गी नाड़ा

पं. सुरेश तलवलकर अपने वादन में कुछ परंपरागत लग्गी नाड़ा की रचनाओं को समाविष्ट करते हैं। इन रचनाओं का विस्तार उनकी मौलिकता प्रदर्शित करती है। उन्होंने उसके स्वरूप पर विचार भी किया है। वे कहते हैं– ''तबले की रचना जिसमें नाड़ा, धाड़ा आता है, लग्गी नाड़ा की श्रेणी में आती है। इसका विस्तार कायदे के समान ही होता है। गायन में जिस प्रकार ख्याल के पश्चात् ठुमरी ऐसा क्रम है, ऐसा ही तबला वादन में लग्गी नाड़ा और लग्गी ऐसे प्रकार सोलो वादन में अलग से बजाने की प्रथा रही है। पेशकार से लेकर रेले तक के सभी वादन प्रकारों का समावेश रखने वाली लग्गीनाड़ा की कई रचना उपलब्ध है।''

अब हम उस परंपरागत लग्गीनाड़ा की रचना को दे रहे हैं जिसका सुंदर विस्तार पं0 सुरेशल तलवलकर अपने वादन में करते हैं। हम यहां उक्त रचना के मात्र भरी भाग को ही दे रहे हैं।

लग्गीनाड़ा, ताल तीनताल, जाति चतस्र

(1)	(कतघेघेनाडा कतघेघेनाडा घेघेनाडा) 2	और खाली
(2)	(कतकतघेघेनाडा) 2 (कतघेघेनाडा) 2 घेघेनाडा	और खाली
(3)	(कतकतकतघेघेनाडा) 2 (कतघेघेनाडा) 2	और खाली
(4)	(कतघेघेनाडा) 2 (घेघेनाडा) 2 (कतघेघेनाडा) 2	और खाली
(5)	(कतकतघेघेनाडा) 2 (घेघेनाडा) (कतघेघेनाडा) 2	और खाली
(6)	(कतकतघेघेनाडा घेघेनातग् घेनाडा) 2	और खाली
(7)	(कतकतघेघेनाडा) 3 घेघेनातग्घेनाडा	और खाली
(8)	कतकतघेघेनाडा घेघेनातग्घेनाडा घेंऽऽत घेघेनाडा घेघेनातग्ेनाडा	और खाली
(9)	(धेंऽऽत घेघेनाडा घेघेनातग्घेनाडा) 2	और खाली
(10)	(धेंऽऽतघेघेनाडा) 3 घेघेनातग्घेनाडा	और खाली
(11)	घेघेनातग्घेनाडा घेघेनातग्घेनाडा तघेघेतघेघेनाडा घेघेनातग्घेनाडा	और खाली
(12)	(तघेघेतघेघेनाडा घेघेनातग्घेनाडा) 2	और खाली
(13)	(तघेघेतघेघेनाडा) 3 घेघेनातग्घेनाडा	और खाली

संदर्भ–

1. पं0 सुरेश तलवलकर के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त
2. पं0 सुरेश तलवलकर के तलबावादन के आडियो–विडियो से प्राप्त
3. पं0 सुरेश तलवलकर के व्याख्यान द्वारा प्राप्त